VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS

(आज का विश्लेषण)

(04 September 2024)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- प्रधानमंत्री की ब्रुनेई यात्रा का भारत के लिए महत्व
- भारत में कृषि को, विकास का इंजन बनाने की प्रक्रिया
- MCQ

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

प्रधानमंत्री की ब्रुनेई यात्रा का भारत के लिए महत्व:

चर्चा में क्यों है?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3 सितंबर को ब्रुनेई दारुस्सलाम की राजधानी बंदर सेरी बेगवान पहुंचे। इस दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश की यात्रा करने वाले वे पहले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। उनकी यह यात्रा भारत और ब्रुनेई के बीच आधिकारिक रूप से राजनयिक संबंध स्थापित होने के 40 साल पूरे होने का प्रतीक है।
- विदेश मंत्रालय के अनुसार, महामहिम सुल्तान हाजी हसनल बोल्किया के निमंत्रण पर प्रधानमंत्री मोदी की 3 और 4 सितंबर की यात्रा का उद्देश्य सभी मौजूदा क्षेत्रों में भारत और ब्रुनेई के बीच द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत करना है।

ब्रुनेई दारुस्सलाम का संक्षिप्त परिचय:

- ब्रुनेई दारुस्सलाम दक्षिण-पूर्व एशिया का एक छोटा सा देश है। यह बोर्नियो द्वीप के उत्तरी तट पर स्थित है। दक्षिण चीन सागर इसके उत्तर में स्थित है और मलेशियाई राज्य सारावाक इसके पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में है।

- ब्रुनेई 1888 से ब्रिटिश संरक्षित राज्य था। इसे 1984 में अपनी स्वतंत्रता मिली। यह राष्ट्रमंडल और दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) का सदस्य है।

ब्रुनेई की जनसांख्यिकी:

- 2023 के आधिकारिक अनुमानों के अनुसार, ब्रुनेई की जनसंख्या 450,500 है। ब्रुनेई के नागरिक उसकी कुल जनसंख्या का लगभग 76% हिस्सा हैं, जबकि शेष स्थायी या अस्थायी निवासी हैं। 80% से अधिक आबादी जातीय रूप से मलय या चीनी है।
- ब्रुनेई एक युवा देश भी है। यहाँ की आबादी का पांचवाँ हिस्सा 15 साल से कम उम्र का है। लगभग आधे लोग 30 साल से कम उम्र के हैं।
- ब्रुनेई की जन्म दर वैश्विक औसत के आसपास है, जबकि इसकी मृत्यु दर दुनिया में सबसे कम है। इसकी जीवन प्रत्याशा वैश्विक औसत से ज्यादा 78 है।

दुनिया में सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले सम्राट:

- 14वीं और 16वीं शताब्दी के बीच, ब्रुनेई दारुस्सलाम एक शक्तिशाली सल्तनत की सीट थी। इस प्रकार, वर्तमान सुल्तान दुनिया में सबसे पुराने लगातार शासन करने वाले राजवंशों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है।

- ब्रुनेई के सुल्तान हाजी हसनल बोल्किया को 1 अगस्त, 1968 को ब्रुनेई के 29वें सुल्तान के रूप में ताज पहनाया गया था, जिससे वे वर्तमान में दुनिया में सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले सम्राट बन गए।
- सुल्तान अपनी अपार संपत्ति के लिए भी उतने ही प्रसिद्ध है। बीबीसी के अनुसार, वह दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक हैं और ऐसे देश में जहाँ जीवन स्तर ऊंचा है, अपने विषयों के बीच वास्तविक लोकप्रियता का आनंद लेते हैं। ब्रुनेई के नागरिक कोई आयकर नहीं देते हैं।
- हालांकि, हाल ही में उन्हें देश में इस्लामी शरिया कानून लागू करने को लेकर आलोचना का सामना करना पड़ा है। 2014 में ब्रुनेई शरिया कानून अपनाने वाला पूर्वी एशिया का पहला देश बन गया - जिसमें व्यभिचार के लिए पत्थर मारने और चोरी करने पर अंग काटने का प्रावधान है। 2019 में, ब्रुनेई ने समलैंगिक यौन संबंध बनाने के लिए लोगों को मौत की सज़ा देने का कानून पेश किया।

भारत-ब्रुनेई संबंध और प्रवासी भारतीय:

- दोनों देशों ने 1984 में संबंध स्थापित किए। हालांकि, भारतीय प्रवासियों ने 1930 के दशक में ही ब्रुनेई में अपनी जड़ें जमा ली थी।

- उल्लेखनीय है ब्रुनेई में भारतीयों के आने का पहला चरण 1920 के दशक में तेल की खोज के साथ शुरू हुआ। ब्रुनेई में लगभग 14,500 भारतीय रहते हैं।
- इनमें से आधे से ज़्यादा तेल और गैस उद्योग, निर्माण और खुदरा व्यापार में अर्ध और अकुशल श्रमिक हैं। ब्रुनेई में कई डॉक्टर भी भारत से हैं। भारतीय शिक्षक, इंजीनियर और आईटी पेशेवर भी हैं। भारतीय व्यापारियों की ब्रुनेई के कपड़ा बाजार में भी अच्छी हिस्सेदारी है। ब्रुनेई में भारतीयों को भी सकारात्मक रूप से देखा जाता है।

भारत के लिए ब्रुनेई का सामरिक महत्व:

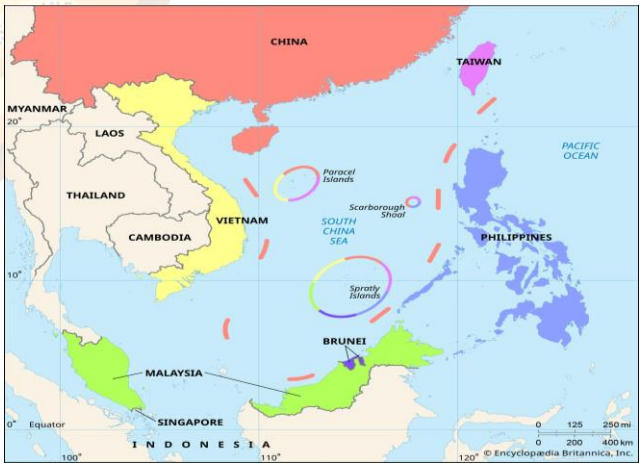

- ब्रुनेई भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और इंडो-पैसिफिक के उसके विजन में एक महत्वपूर्ण साझेदार है। विदेश मंत्रालय ने कहा है कि 2012 से 2015 तक भारत के लिए देश समन्वयक के रूप में ब्रुनेई ने भारत को आसियान के करीब लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 'एक्ट ईस्ट' नीति को 1990 के दशक में शुरू की गई 'लुक ईस्ट' नीति के अगले चरण के रूप में तैयार किया गया था। उल्लेखनीय है कि 'लुक ईस्ट' नीति के

तहत भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ अपने संबंधों को गहरा करने की कोशिश की। दक्षिण-पूर्व एशिया से अपनी निकटता के कारण पूर्वोत्तर भारतीय राज्यों को इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी।

- 2014 में, 'लुक ईस्ट' नीति को 'एक्ट ईस्ट' के रूप में बदल दिया गया, जिसमें उन संबंधों को मजबूत करने की दिशा में अधिक कार्रवाई करने का आग्रह किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि 10 सदस्यीय समूह आसियान (दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों का संघ) भारत की एक्ट ईस्ट नीति का "केंद्रीय स्तंभ" है। ब्रुनेई भी आसियान का सदस्य है।
- पिछले कुछ दशकों में कई दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों ने तेजी से आर्थिक विकास देखा है। इसलिए, वाणिज्य भी इन संबंधों का केंद्र है। उदाहरण के लिए, ब्रुनेई इस क्षेत्र के सबसे बड़े तेल और गैस उत्पादकों में से एक है।
- हाल के वर्षों में विश्व मामलों में चीन के प्रभुत्व के संदर्भ में दक्षिण-पूर्व एशिया और हिंद-प्रशांत पर ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग के नेतृत्व में इसने और अधिक सत्तावादी रुख अपनाया है। जबकि चीन की आर्थिक स्थिति उसे इस क्षेत्र में बहुत ताकत देती है, जिससे वह कई परियोजनाओं को वित्तपोषित कर सकता है और अन्य देशों को ऋण दे सकता है, इसने दक्षिण चीन सागर में

अपने आचरण जैसे मुद्दों पर दूसरों को परेशान भी किया है। इस प्रकार भारत चीनी प्रभाव का मुकाबला कर सकता है।

भारत-ब्रुनेई के मध्य नौसैनिक और अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग:

- उल्लेखनीय है कि ब्रुनेई भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत ने 2000 में ब्रुनेई में एक टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड स्टेशन स्थापित किया था जो भारतीय उपग्रहों और उपग्रह प्रक्षेपण वाहनों के पूर्व की ओर प्रक्षेपण को ट्रैक और मॉनिटर करता है।
- नौसैनिक संबंध हमारे द्विपक्षीय सहयोग का एक और महत्वपूर्ण स्तंभ है। हमारे पास रक्षा पर एक समझौता ज्ञापन है, जिस पर 2016 में हस्ताक्षर किए गए थे, और तब से इसे 2021 में नवीनीकृत किया गया है। यह हमारे सहयोग के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है जिसमें उच्च स्तरों पर नौसेना और तटरक्षक जहाजों की नियमित आदान-प्रदान, विनिमय यात्राएं और संयुक्त अभ्यास और एक-दूसरे की प्रदर्शनियों में भागीदारी शामिल हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत में कृषि को, विकास का इंजन बनाने की प्रक्रिया:

परिचय:

- हाल ही में एक साक्षात्कार में IMF की डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर गीता गोपीनाथ ने इस बात पर जोर दिया कि भारत को अब से लेकर 2030 के बीच कुल मिलाकर 60-148 मिलियन अतिरिक्त नौकरियों की जरूरत है। लेकिन उन्होंने कृषि को कम महत्व देते हुए कहा, हमें "कृषि से श्रमिकों को हटाकर अन्य क्षेत्रों में ले जाने की जरूरत है"।
- उल्लेखनीय है कि 1954 में जब आर्थर लुईस ने तर्क दिया था कि अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि से विनिर्माण और सेवाओं तथा ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में जाने वाले श्रमिकों को शामिल किया जाता है, तब कृषि कम तकनीक वाली और निर्वाह-उन्मुख थी। लेकिन आज, कई देशों में खेती उच्च तकनीक वाली और अत्यधिक उत्पादक है। भारतीय कृषि भी वहां पहुंच सकती है, यदि हम कृषि को उसका उचित स्थान दें और खेती करने के तरीके पर पुनर्विचार करें।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारतीय कृषि की वस्तुस्थिति:

- जहां तक भारतीय कृषि की बात है इसकी पांच साल की औसत वृद्धि दर 4 प्रतिशत रही है और यह सकल घरेलू उत्पाद में केवल 18 प्रतिशत का योगदान देती है। इसकी वृद्धि अनिश्चित और पर्यावरण के दृष्टि से महंगी रही है।
- भारत में कृषि सभी श्रमिकों के 46 प्रतिशत और ग्रामीण श्रमिकों के 60 प्रतिशत को रोजगार देती है, लेकिन आय कम बनी हुई है, और शिक्षित युवा खेती नहीं करना चाहते हैं।
- ऐसे में कृषि को विकास का इंजन बनाने तथा युवाओं के लिए आकर्षक बनाने के लिए हमें पारिस्थितिकीय, प्रौद्योगिकीय एवं संस्थागत चुनौतियों पर काबू पाना होगा; कृषि को संबद्ध क्षेत्रों के साथ पुनः जोड़ना होगा; तथा ग्रामीण गैर-कृषि क्षेत्र के साथ तालमेल बनाना होगा।

कृषि को पारिस्थितिकी के लिहाज से अनुकूल बनाना:

- पारिस्थितिकी के लिहाज से पानी और मिट्टी को पुनर्जीवित करना होगा और जलवायु परिवर्तन से निपटना होगा।
- **पारिस्थितिकी दृष्टि से अनुकूल सिंचाई:**

- सिंचाई उच्च उत्पादकता और सूखे से निपटने की कुंजी है। वर्तमान में, भारत के सकल फसल क्षेत्र का केवल आधा हिस्सा ही सिंचित है, मुख्य रूप से भूजल के माध्यम से, जिसके अत्यधिक दोहन के कारण जल स्तर में खतरनाक गिरावट आई है। एक उल्लेखनीय कारण मुफ्त बिजली है।
- सिंचाई विस्तार के लिए भूजल विनियमन, वर्षा जल संचयन और सूक्ष्म सिंचाई का संयोजन प्रभावी होगा। उदाहरण के लिए, गुजरात में 1999-2009 के बीच सूक्ष्म संरचनाओं के माध्यम से बड़े पैमाने पर वर्षा जल संचयन के कारण कृषि में प्रति वर्ष 9.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्षा जल संचयन सतही सिंचाई प्रदान करता है और भूजल को रिचार्ज करता है।
- इसके साथ ही, पानी के उपयोग में दक्षता आवश्यक है, जिसमें ड्रिप सिंचाई से लेकर कम पानी की खपत वाली फसलें शामिल हैं। 2014 में, 13 राज्यों के लिए एक सरकारी मूल्यांकन में पाया गया कि सूक्ष्म सिंचाई (विशेष रूप से ड्रिप) ने सिंचाई लागत और उर्वरक उपयोग को कम किया, जबकि औसत फल और सब्जी की पैदावार में 48 प्रतिशत और 52 प्रतिशत की वृद्धि हुई, और किसानों की आय में 48 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अब तक, हमारे फसल क्षेत्र के 10 प्रतिशत से भी कम हिस्से में सूक्ष्म सिंचाई है।

- **मृदा गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता:** इसके बाद, मिट्टी को सुधारने की ज़रूरत है। अनुमान है कि हमारे भू-क्षेत्र का 37 प्रतिशत हिस्सा जलभराव, मिट्टी की लवणता, रासायनिक प्रदूषण और पोषक तत्वों की कमी के कारण क्षरित हो चुका है।

कृषि को प्रौद्योगिकी से जोड़ना:

- तकनीकी रूप से, अनाज की एकल खेती से फसल विविधता और कृषि-पारिस्थितिक खेती की ओर बढ़ना चाहिए। इससे मिट्टी पुनर्जीवित होगी, लागत बचेगी, पैदावार बढ़ेगी, रोजगार सृजित होंगे और मुनाफा बढ़ेगा। मुर्गी पालन, फल और सब्जियों सहित उत्पादन की विविधता, बदलते आहार पैटर्न को भी पूरा करेगी।
- जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भी तकनीक भी महत्वपूर्ण है, खासकर गर्मी प्रतिरोधी फसलों और नई कृषि तकनीकों के कुशल विस्तार के लिए।
- सेल फोन यहां बहुत संभावनाएं प्रदान करते हैं। साइंस में 2019 के एक शोध पत्र में पाया गया कि सेल फोन के माध्यम से प्रदान की गई कृषि संबंधी जानकारी ने भारत और उप-सहारा अफ्रीका में पैदावार में 4 प्रतिशत और अनुशंसित इनपुट को अपनाने की संभावनाओं में 22 प्रतिशत की वृद्धि की।
- ड्रोन कीट नियंत्रण और फसल निगरानी के लिए नए साधन प्रदान करते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कृषि क्षेत्र में संस्थागत नवाचार को अपनाना:

- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि देश में कृषि के क्षेत्र में संस्थागत नवाचार की आवश्यकता है। आज, 86 प्रतिशत भारतीय किसान दो हेक्टेयर या उससे कम भूमि पर खेती करते हैं, जो कुल बोए गए क्षेत्र का 47 प्रतिशत है।
- इनमे अधिकांश खेत इतने छोटे हैं कि वे 'स्केल ऑफ़ इकॉनमी' का लाभ नहीं उठा सकते, मशीनों का कुशलतापूर्वक उपयोग नहीं कर सकते, या बाजारों में अच्छी तरह से मोलभाव नहीं कर सकते। इनमे से लगभग 75-80 प्रतिशत किसान अनौपचारिक ऋण का उपयोग करते हैं था इनकी कृषि आय कम और अनिश्चित है।
- यदि पहले उनकी उत्पादन से जुडी बाधाओं को दूर कर दिया जाये तो उच्च फसल मूल्य और बाजार सुधार ऐसे छोटे किसानों को लाभान्वित कर सकते हैं।

खेतों का आकार कैसे बढ़ा सकते हैं?

- इसका एक उत्तर छोटे किसानों को सहयोग करने और 'समूह' में खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना है। देश में 1960 के दशक में समूह खेती के प्रयास, खराब संस्थागत डिजाइन के कारण विफल हो गए।

- साहित्य दर्शाता है कि छोटे समूह आर्थिक रूप से समरूप होने चाहिए, उनके बीच सहयोग स्वैच्छिक होना चाहिए और विश्वास द्वारा पुख्ता होना चाहिए। सहभागी निर्णय लेने और लागत और रिटर्न का न्यायसंगत बंटवारा होना चाहिए। उल्लेखनीय है कि सावधानी से तैयार की गई 'समूह खेती' की पहल कुछ क्षेत्रों में भरपूर लाभांश दे रही है।
- **केरल के 'कुदुम्बश्री' के तहत सामूहिक खेती की सफलता:**
  - ➢ केरल ने 2000 के दशक में अपने गरीबी-विरोधी मिशन, 'कुदुम्बश्री' के हिस्से के रूप में सभी महिला सदस्यों वाली 'समूह खेती' को बढ़ावा दिया। अब इसमें 73,000 से अधिक 'समूह खेत' हैं। प्रत्येक समूह पट्टे पर ली गई भूमि पर खेती करता है, श्रम और संसाधनों को जोड़ता है, और लागत और लाभ साझा करता है। उन्हें स्टार्ट-अप अनुदान, तकनीकी प्रशिक्षण और नाबार्ड के माध्यम से रियायती ऋण तक पहुँच मिलती है।
  - ➢ दो जिलों में महिलाओं के समूह के खेतों और बड़े पैमाने पर पुरुषों द्वारा प्रबंधित व्यक्तिगत खेतों की तुलना करते हुए प्रोफेसर बीना अग्रवाल के शोध से पता चला कि समूह के खेतों के उत्पादन का वार्षिक मूल्य/हेक्टेयर छोटे व्यक्तिगत

खेतों के उत्पादन का 1.8 गुना था। समूह के खेतों में औसत शुद्ध लाभ/हेक्टेयर व्यक्तिगत खेतों के मुकाबले 1.6 गुना था।

➢ इसके अतिरिक्त साथ मिलकर खेती करने से महिलाओं को कौशल भी मिला और उन्हें सामाजिक रूप से सशक्त बनाया गया।

- **बिहार, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना और गुजरात का उदाहरण:**

➢ बिहार, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना और गुजरात में भी समूह खेती फल-फूल रही है। समूह बनाने से उन्हें जोत को समेकित करने, सिंचाई उपकरणों में निवेश करने और श्रम और इनपुट लागतों पर बचत करने में मदद मिलती है। समूह खेती से व्यक्तिगत खेती की तुलना में अधिक उपज मिलती है।

➢ कुछ युवा समूह तकनीकी उन्नति से आकर्षित होकर और एक साथ काम करके नौकरी के लिए पलायन करने के बजाय सब्जी की खेती कर रहे हैं।

➢ संघीय संरचनाओं ने समूह खेती को मजबूत किया है, उन्हें जलवायु लचीलापन के लिए उपाय करने में सक्षम बनाया है, और कुछ ने विपणन के लिए किसान-उत्पादक संगठन बनाए हैं।

➢ पशुधन, मत्स्य पालन और वानिकी भी भारी संवृद्धि और रोजगार की संभावनाएं प्रदान करते हैं। 2022-23 में मत्स्य पालन में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिससे 28 मिलियन नौकरियां (महिलाओं के लिए 44 प्रतिशत) उपलब्ध हुईं।

कृषि को संबद्ध क्षेत्रों के साथ पुनः जोड़ना होगा:

- अंत में, चूंकि ग्रामीण आय का 61 प्रतिशत हिस्सा गैर-कृषि क्षेत्र से आता है, इसलिए कृषि-प्रसंस्करण, मशीन टूल्स, इको-टूरिज्म आदि में कृषि-गैर-कृषि संबंधों का विस्तार और तालमेल आय और रोजगार बढ़ा सकता है।
- उल्लेखनीय है कि हमारे पास कृषि को तकनीकी रूप से परिष्कृत, पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ और संस्थागत रूप से अभिनव बनाने का अवसर है। यह विकास का इंजन बन सकता है और युवाओं के लिए आकर्षक रोजगार पैदा कर सकता है, बशर्ते हम पुराने आर्थिक सिद्धांतों को त्याग दें और खेती करने के तरीके में बदलाव करें।

MCQs

Q.1. हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ब्रुनेई दारुस्सलाम की आधिकारिक यात्रा पर थे। ऐसे में 'ब्रुनेई के भौगोलिक अवस्थिति' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. यह दुनिया के दूसरे सबसे बड़े द्वीप, बोर्नियो द्वीप के उत्तरी तट पर स्थित है।
2. इसके उत्तर में दक्षिण चीन सागर स्थित है और बाकी तीन तरफ से मलेशियाई राज्य सारावाक से घिरा है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans. (b)

Q.2. चर्चा में रहा ब्रुनेई, भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत ने निम्नलिखित किस वर्ष ब्रुनेई में एक टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड स्टेशन स्थापित किया था जो भारतीय उपग्रहों और उपग्रह प्रक्षेपण वाहनों के पूर्व की ओर प्रक्षेपण को ट्रैक और मॉनिटर करता है?

(a) 2015 में

(b) 2007 में

(c) 2004 में

(d) 2000 में

Ans. (d)

Q.3. भारत के लिए ब्रुनेई के 'सामरिक महत्व' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. ब्रुनेई भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और इंडो-पैसिफिक के उसके विजन में एक महत्वपूर्ण साझेदार है।
2. ब्रुनेई इस क्षेत्र के सबसे बड़े तेल और गैस उत्पादकों में से एक है। ऐसे में इसका महत्व आर्थिक दृष्टि से भी है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans. (c)

Q.4. प्रसिद्ध अर्थशास्त्री आर्थर लुईस ने 1954 में अपना 'लुईस मॉडल' दिया था। उनका यह प्रसिद्ध मॉडल किससे जुड़ा हुआ है?

(a) इस मॉडल में विकासशील देशों के विकास के लिए एक नया पूंजीवादी मार्ग सुझाया था।

(b) इसमें तर्क दिया गया था कि अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि से विनिर्माण और सेवाओं की तरफ श्रमिकों को ले जाना होगा।

(c) यह मॉडल वास्तविकता कभी पूर्ण तरीके से अपनाया नहीं जा सका।

(d) उपर्युक्त सभी कथन जुड़े हुए हैं।

Ans. (d)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

Q.5. चर्चा में रहे 'भारतीय कृषि की वस्तुस्थिति' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. यह सकल घरेलू उत्पाद में 18 प्रतिशत का योगदान देती है।
2. भारत में कृषि ग्रामीण श्रमिकों के 46 प्रतिशत को रोजगार देती है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans. (a)